Vol.: 25, Issue-II
(January–June, 2024)

ISSN No.: 2277-4270
UGC CARE Listed Journal

आम्नायिकी

पञ्चविंशोऽङ्कः (द्वितीयः), जनवरी-जून, २०२४
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वाराअनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः, प्रो०(डॉ.)देवेन्द्रनाथपाण्डेयः
डॉ०पुष्पादीक्षितः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

सहसम्पादकाः
डॉ०उदयप्रतापभारती, डॉ० शान्तिलाल सालवी,
डॉ०राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० विनीतमिश्रः, डॉ० शुचिपाण्डेयः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

प्रधानसंरक्षकः

कुलपतिः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः

संरक्षकमण्डलम्

प्रोफेसरविजयकुमारशुक्लः, कुलगुरु, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसरराधावल्लभत्रिपाठी, पूर्वकुलपतिः, राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्, नईदिल्ली।
प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, राष्ट्रपतिपुरस्कारसम्मानितः, पूर्वसंकायप्रमुखः, सं.वि.ध.वि. संकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसरबलवंतरायशांतिलालजानी, कुलाधिपति, डॉ0हरीसिंहगौरविश्वविद्यालयः, सागर (म0प्र0)।
प्रोफेसरश्रीनिवासवरखेड़ी, कुलपतिः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नई दिल्ली।
प्रोफेसरमुरलीमनोहरपाठकः, कुलपतिः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नई दिल्ली।
प्रोफेसर रामसेवकदूबे, कुलपतिः, जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुरम् (राजस्थानम्)।
प्रोफेसरशशिनाथझा, कुलपतिः, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयः कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा (बिहार)।
प्रोफेसरसोमदेवशतांशु, कुलपतिः, गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालयः), हरिद्वार।
प्रोफेसरहरेरामत्रिपाठीः, कुलपतिः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
Prof. Yogadhyan Ahuja, Metropolition State College, Denver co 80204 U.S.A.
Prof. Hisayoshi Miyamota, 6-1-15, Asakusa, Taito-Ku, Tokya, Japan
Dr. Sree Nivashan Sashidharan, Malaysia

परामर्शदातारः

प्रोफेसरआनन्दकुमारत्यागी, कुलपतिः, महात्मागांधीकाशीविद्यापीठ, वाराणसी।
प्रोफेसररमाशंकरमिश्रः, पूर्वविभागाध्यक्षः, संस्कृतविभागः, लखनऊविश्वविद्यालयः, लखनऊ।
प्रोफेसरसत्यप्रकाशशर्मा, पूर्वविभागाध्यक्षः, संस्कृतविभागः, अलीगढ़मुस्लिमविश्वविद्यालयः, अलीगढ़।
प्रोफेसरबनारसीत्रिपाठी, पूर्वविभागाध्यक्षः, संस्कृतविभागः, गोरखपुरविश्वविद्यालयः, गोरखपुर।
प्रोफेसरदिनेशचन्द्रः शास्त्री, कुलपतिः, उत्तरखण्डसंस्कृतविश्वद्यालयः, हरिद्वारम् (उत्तराखण्डम्)।
प्रोफेसररहसबिहारीद्विवेदी, पूर्व अध्यक्षः संस्कृतविभागः, रानीदुर्गावतीविश्वविद्यालयः, जबलपुर (म.प्र.)
डॉ०जीतरामभट्टः, सचिवः, हिन्दीअकादमी, दिल्ली सरकार।
प्रोफेसरनिरंजन पी.पटेलः, कुलपतिः, सरदारपटेलविश्वविद्यालयः, गुजरात।
प्रोफेसरदीनानाथशर्मा, संस्कृत एवं प्राकृतविभाग, गुजरातविश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात।
Prof. Kenneth Czysk, Head, Department of Asian Studies, University of Copenhagen, Dennmark
Prof. (Dr.) Mrs. Karin C. Presindaz, University of Vienna Austria
Prof. Ashok Aklujkar, Sanskrit & Indian Studies, Kanada
Prof. Nalini Balveer, Sanskrit & Indian Studies, Peris (France)
Prof. (Dr.) Sanjay Mishra, Social Sciences, Adigrat University Adigrat Tigray, Ethiopia PO Box 50

समीक्षकाः

प्रोफेसर(डॉ०)देवेन्द्रनाथपाण्डेयः, विभागाध्यक्षः, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि.,वाराणसी।
प्रोफेसररवीन्द्रनाथभट्टाचार्य, अध्यक्षः, संस्कृतविभागः, कलकत्ताविश्वविद्यालयः, कलकत्ता।
डॉ० प्रेमशंकरउपाध्याय, कौमारभृत्यविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि.,वाराणसी।
डॉ० आर०के० जायसवाल, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि.,वाराणसी।
डॉ० विनीतमिश्रः, एनेस्थिसियाविभागः, राजकीयचिकित्सामहाविद्यालयः, गाजीपुरम्।
डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेन, बी.एड्. विभागः वीरबहादुरसिंहपूर्वाञ्चलविश्वविद्यालय, जौनुपरम्।

सहयोगिनः

प्रो०उपेन्द्रकुमारत्रिपाठी, डॉ०सुनीलकात्यायनः, डॉ० नारायणप्रसादभट्टराई, प्रो० जे.एस. त्रिपाठी, डॉ० प्रेमशंकरउपाध्याय, डॉ०पी०के०भारती, डॉ० रविशंकर खत्री, डॉ० विनीत तिवारी, डॉ० विशाल सिंह, श्रीकिशनकुमारविश्वकर्मा

क्षेत्रीय प्रभारी

डॉ० बाबू लाल मीना, भरतपुर, राजस्थान
डॉ० रविशंकर खत्री, वाराणसी
डॉ० सुनेली देई, उड़ीसा
डॉ० प्रीति राय, लखनऊ
डॉ० शमीमा नसरीन, बांग्लादेश, ढाका
डॉ० गरिमामणि त्रिपाठी, नई दिल्ली
डॉ० वाहिद नसरू, श्रीनगर, कश्मीर
डॉ० विपुलभट्ट, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
डॉ० रीना कपूर, दिल्ली
डॉ० रेमिथ जार्ज कैरी, आसाम
डॉ० शैलेन्द्र कुमार, नागपुर
डॉ० शीतल नन्दल, रोहतक, हरियाणा

प्राप्तिस्थानम्

वेदविभागः, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

मुद्रकः

विकास मार्केटिंग, लंका, वाराणसी।

14.	आपका बंटी: बिलखते बचपन की अनसुनी कहानी **डॉ. ममता चावला**	84-88
15.	जानुसंधि शूल में जलौका अवचरण की भूमिका **आराधना, डॉ0 भोलानाथ मौर्य**	89-93
16.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में बौद्ध धर्म-दर्शन का स्वरूप **डॉ0 जितेन्द्र सिंह**	94-98
17.	The Quest for Liberation in Kapila Gītā **Mintu Upadhyay**	99-102
18.	A review study on Impact of Online classes on Anxiety of school Students in the era of COVID-19 pandemic in Varanasi City. **Km. Supriya**	103-108
19.	A Study of Pre-Game Self-Confidence and State Anxiety with Refernce to Sports Performance **Manjunath Mannur**	109-116
20.	Energy and development in India (1947-1998) : With special reference to Electric power **Nishant Raj**	117-122
21.	A Cadaveric Case Study of Kurpara Marma: Unveiling the Mysteries of Ancient Indian Anatomy **Dr. Annapurna. R, Dr. B.G.Kulkarni**	123-130
22.	Indian Dark Tourism: Concept, Elements, and Significance **Alok Ranjan Singh, Dr. Anil Kumar Singh**	131-137
23.	Cultural Displacement and Communication Barriers: Insights from 'The Interpreter of Maladies' By Jhumpa Lahiri **Angayarkanni A, Dr. Soundararajan R**	138-142
24.	Non-Performing assets of MSMEs Sector in India **Dr. Aarti Deveshwar, Diksha Yadav**	143-146

आपका बंटी : बिलखते बचपन की अनसुनी कहानी

डॉ. ममता चावला*

बचपन, जीवन का खूबसूरत पड़ाव! जहां न कल की चिंता, ना किसी का डर, न तेरा- न मेरा, पूरी आजादी, पूरा आनंद, केवल और केवल मासूमियत, सुकून, खुशियां और बहुत सारी जिज्ञासाएं। जीवन के इस पड़ाव को हम बार-बार जीना चाहते हैं। बचपन में मिला मां का प्यार, पिता का दुलार, दादा दादी की कहानियां, छोटे भाई -बहनों के साथ नोक झोक, सभी बातें हमारे चरित्र को गढ़ रही होती हैं। हम अपने माता-पिता के आश्रय में खुद को सुरक्षित- संरक्षित महसूस करते हैं। हमारा बचपन एक कोरी स्लेट की तरह होता है, जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है।

बचपन अनमोल है। खुशनसीब होते हैं वह बच्चे,जिनको ऐसा खुशनसीब बचपन मिलता है। परिस्थितियों की मार कई बार कुछ बच्चों के बचपन को, उनसे छीन लेती है, ऐसे ही सिसकते बचपन की मर्म स्पर्शी और विचारोंतेजक कहानी को प्रस्तुत करता है, प्रसिद्ध उपन्यासकार मन्नू भंडारी का कालजयी उपन्यास आपका-बंटी।

इस उपन्यास के माध्यम से मन्नू भंडारी ने आधुनिक जीवन के टूटन से, पैदा हुई पीड़ा दायक स्थितियों की मार झेलते बच्चे , बंटी की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने एक बच्चे की सरलता, कोमलता,निष्पापता को , जटिल कुंठित और उलझनपूर्ण बनते चले जाने की क्रिया का कलात्मक अंकन किया है। यह सच है कि बंटी की सारी समस्याएं अपने माता-पिता से ना जुड़ पाने के कारण उभरी हैं; और यह भी उतना ही सच है कि कुछ हद तक बंटी की स्थिति आधुनिक जीवन की जटिलता का, मूल्य हीनता का, शाप है।

आपका बंटी उपन्यास महज 9 वर्ष के बालक अरूप बत्रा की ही कहानी नहीं है अपितु उन सभी बच्चों की कहानी है जिनका जीवन अपने मां-बाप से दूर होने के लिए अभिशप्त है। उपन्यास की भूमिका में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि बंटी केवल अजय और शंकुन की उपेक्षित संतान नहीं है बल्कि यह कहानी आधुनिक जीवन में उन सभी तलाकशुदा परिवारों की कहानी बन जाती है जहां बच्चों को बंटी की तरह जीवन की विपरीत स्थितियों का शिकार होना पड़ता है। स्वयं मन्नू भंडारी कहती हैं –

"बंटी किन्हीं दो -एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है-अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग स्थितियों में।"[1]

पति-पत्नी की अहम की टकराहटो के बीच पिसता हुआ बंटी किसी अनचाही वस्तु की तरह घर के किसी कोने में पड़ा रहता है। इस उपन्यास में तलाकशुदा दंपति के बच्चों की समस्या को पूरे विस्तार से देखने की कोशिश की गई है। यह आधुनिक सामाजिक जीवन की ऐसी समस्या है जिसका हल किसी के पास नहीं है। इस समस्या के परिणाम स्वरूप मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार होकर बच्चे एक डरावने सच के रूप में उभर रहे हैं। आपका बंटी एक ऐसे परिवार की कहानी है जिसके तीन सदस्य हैं-शकुन, अजय और बंटी। विपरीत परिस्थितियों

* एसोसिएट प्रोफेसर, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।